# पाठ – 6
## भारत की बहादुर बेटियाँ

**फ़ीचर**

**प्रस्तावनाः–**

भारत की ये बहादुर **बेटियाँ** एक **फ़ीचर** ह, जो विभिन्न क्षेत्रों में **प्रसिद्धि** के शिखर पर **पहुँची** महिलाओं पर लिखा गया है। **महिलाएँ** पुरूषों से कम नहीं **हैं |** भारत की बेटियों ने अपने आत्मविश्वास, संकल्प और परिश्रम से ऐसी **उपलब्धियाँ** हासिल की **हैं,** जिससे भारत को पूरे विश्व में सिर उठाने का मौका मिला है। नारियों में अदम्य शक्ति छिपी है। दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। उनके विकास से ही किसी देश का, दनिया का विकास संभव है। इस **फ़ीचर** के माध्यम से हम कल्पना चावला **और बछेंद्री** पाल जैसी बहादुर बेटियों के जीवन का कुछ अंश **व** हम मदर **टेरेसा** आदि के विषय में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। जिसमें समसामयिक पकड़ को प्रधानता दी जाती है। यही कारण है कि इसको समाचारात्मक निबंध की संज्ञा दी **गई है।**

## सारांश

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः' अर्थात् **जहाँ** नारी का सम्मान होता है **वहाँ** देवताओं का निवास होता है यानी **वहाँ** सुख–समृद्धि, शांति होती है। हम ऐसी ही सम्मान प्राप्त महिलाओं में से दो पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

## कल्पना चावला

यह अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय महिला है। इनका जन्म हरियाणा प्रांत के करनाल शहर में 1961 की पहली जुलाई को एक साधारण व्यापारी परिवार में हुआ था। पिता बनवारी लाल एक साधारण व्यापारी थे तथा **माँ** संयोगिता एक सामान्य गृहिणी थी। कल्पना की शिक्षा भी सामान्य लड़कियों की तरह उनके शहर के **स्कूल** से शुरू हुई थी, लेकिन कल्पना ने अपने लक्ष्य को ध्यान में रखा और साहस के साथ आगे बढ़ती रहीं। जब कल्पना 11**वीं** कक्षा में पढ़ती थी, तब अमेरिकी अंतरिक्ष यान 'बाइकिंग' मंगल ग्रह पर उतरा था। इस बात से कल्पना इतनी **रोमांचित** हुई कि उन्होंने अपनी कक्षा की परियोजना में मंगल ग्रह को दर्शाया। शुरू से ही कल्पना के मन में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति लगाव रहा और वे अंतरिक्ष की यात्रा के सपने देखती रही। उन्होंने चंडीगढ़ के पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज में एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग को अपना विषय चुना। 1982 में इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर कल्पना अपने परिवार वालो के कठोर विरोध के बावजूद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली गई। **वहाँ उन्होंने टैक्सास** विश्वविद्यालय से एअरोस्पेस इंजीनियरिंग में एम.एस. की डिग्री ली। तत्पश्चात **बोल्डर** में कोलराडो विश्वविद्यालय से 1988 में एअरोस्पेस में पीएचडी की। जब अमेरिकी अंतरिक्ष यान के कोलंबिया मिशन के लिए 2962 वैज्ञानिकों में कल्पना **को** सर्वाधिक योग्य पाया गया और उन्हें उस मिशन का विशेषज्ञ बनाया गया। इसके लिए कल्पना ने कठोर प्रशिक्षण लिया और 19 नवम्बर को पहली बार अंतरिक्ष यात्रा पर निकल पड़ी। जब वह अंतरिक्ष में थी तब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री इंद्र कुमार गुजराल ने उनसे बात करके उन्हें इस अभियान के लिए बधाई दी उनका यह अभियान काफी सफल रहा और इस दौरान उन्होने कई नए प्रयोग कर सबसे अपनी योग्यता का लोहा मनवा लिया। फिर जब अमेरिका के अंतरिक्ष यान **कोलंबिया** के दूसरी बार अंतरिक्ष में जाने का कार्यक्रम

बना, तो एकबार फिर कल्पना को उसके अभियान दल में शामिल किया गया। 16 जनवरी 2003 को कल्पना एक बार फिर केनेडी अंतरिक्ष केन्द्र से अंतरिक्ष यात्रा पर निकल पड़ी। 16 दिन के पश्चात् अपनी सफल यात्रा के बाद जब यह अभियान दल 1 फरवरी 2003 को पृथ्वी पर लौट रहा था तो पृथ्वी से कुछ मिनट की दूरी पर ही इस दल का यान भयानक विस्फोट के साथ नष्ट हो गया और अपने अभियान दल के सात साथियों के साथ अंतरिक्ष की यह बेटी अंतरिक्ष में ही खो गई। भारतीय प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी ने संसद में कल्पना के प्रति **श्रद्धांजलि** व्यक्त करते हुए घोषणा की **थी** कि उनकी स्मृति में अंतरिक्ष यान मेटसेट का नाम 'कल्पना–1' रखा जाएगा।

## बछेंद्री पाल

**बछेंद्री पाल** एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला **हैं**। इनका जन्म सन् 1954 में चमोली जिले में परम्परागत पुरूष वर्चस्व वाले एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था। पिता किशनपाल सिंह और **माँ** हंसादेई नेगी की **पाँच** संतानों में **बछेंद्री पाल** तीसरी संतान है। **बछेंद्री पाल** को पहाड़ो पर जाना बहुत अच्छा लगता था पर उनके बड़े भाई उन्हें **डाँट** दिया करते थे। इससे उनका मनोबल और बढ़ा और उन्होंने पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेना प्रारम्भ कर दिया। आठवीं पास करने के बाद पिता ने उनकी पढ़ाई का खर्च उठाने से मना कर दिया। **बछेंद्री** ने इसका भी रास्ता निका**ल** लिया। उन्होंने सिलाई का काम सीखा और सिलाई करके पढ़ाई का खर्च जुटाने लगी। इस तरह उन्होनें संस्कृत में एम.ए. तथा बीएड की उपाधि प्राप्त की। इसी दौरान **बछेंद्री पाल** ने कालानाग पर्वत की चढ़ाई की। 1982 में उन्होंने गंगोत्री ग्लेशियर तथा रूड गैरा की चढ़ाई की जिससे इनमें आत्मविश्वास और बढ़ा। अगस्त 1983 में जब दिल्ली में हिमालय पर्वतारोहियों का सम्मेलन हुआ, तब वे पहली बार तेनजिग नोर्गे तथा जुंकेताबी से **मिलीं**। **ये** एवरेस्ट पर चढ़ने **वाले** पहले पुरूष एवं महिला **हैं**। तब उन्होंने संकल्प किया कि वे भी उनकी तरह एवरेस्ट **पहुँचेगी**। वह दिन आ ही गया। 23 मई 1984 को दोपहर 1 बजकर 7 **मिनट** पर एवरेस्ट पर **पहुँचकर** भारत का झण्डा फहरा दिया। उस समय उनके साथ **पर्वतारोही** अंग दोरजी भी थे। इस तरह **बछेंद्री पाल** को एवरेस्ट पर **पहुँचने** वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ।